चौदह भुवन एक पति होई। भूतद्रोह तिष्टइ नहिं सोई ।।
गुन सागर नागर नर जोऊ। अलप लोभ भल कहइ न कोऊ ।।
दो०-काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत।। **38** ।।
तात राम नहिं नर भूपाला। भुवनेस्वर कालहु कर काला ।।
ब्रह्म अनामय अज भगवंता। ब्यापक अजित अनादि अनंता ।।
गो द्विज धेनु देव हितकारी। कृपा सिंधु मानुष तनुधारी ।।
जन रंजन भंजन खल ब्राता। बेद धर्म रच्छक सुनु भ्राता ।।
ताहि बयरु तजि नाइअ माथा। प्रनतारति भंजन रघुनाथा ।।
देहु नाथ प्रभु कहुँ बैदेही। भजहु राम बिनु हेतु सनेही ।।
सरन गएँ प्रभु ताहु न त्यागा। बिस्व द्रोह कृत अघ जेहि लागा ।।
जासु नाम त्रय ताप नसावन। सोइ प्रभु प्रगट समुझु जियँ रावन ।।
दो०-बार बार पद लागउँ बिनय करउँ दससीस।
परिहरि मान मोह मद भजहु कोसलाधीस।। 39(क) ।।
मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन कहि पठई यह बात।
तुरत सो मैं प्रभु सन कही पाइ सुअवसरु तात।। **39**(ख) ।।
माल्यवंत अति सचिव सयाना। तासु बचन सुनि अति सुख माना ।।
तात अनुज तव नीति बिभूषन। सो उर धरहु जो कहत बिभीषन ।।
रिपु उतकरष कहत सठ दोऊ। दूरि न करहु इहाँ हइ कोऊ ।।
माल्यवंत गृह गयउ बहोरी। कहइ बिभीषनु पुनि कर जोरी ।।
सुमति कुमति सब कें उर रहहीं। नाथ पुरान निगम अस कहहीं ।।
जहाँ सुमति तहँ संपति नाना। जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना ।।
तव उर कुमति बसी बिपरीता। हित अनहित मानहु रिपु प्रीता ।।
कालराति निसिचर कुल केरी। तेहि सीता पर प्रीति घनेरी ।।
दो०-तात चरन गहि मागउँ राखहु मोर दुलार।
सीता देहु राम कहुँ अहित न होइ तुम्हार।। **40** ।।
बुध पुरान श्रुति संमत बानी। कहि बिभीषन नीति बखानी ।।
सुनत दसानन उठा रिसाई। खल तोहि निकट मृत्यु अब आई ।।
जिअसि सदा सठ मोर जिआवा। रिपु कर पच्छ मूढ़ तोहि भावा ।।
कहसि न खल अस को जग माही। भुज बल जाहि जिता मैं नाहीं ।।
मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती। सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीती ।।
अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा। अनुज गहे पद बारहिं बारा ।।